P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6 * ISSUE-5 * (Part-1) January- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

छायावादी काव्य में पर्यावरणीय चिंतन

सारांश

हिंदी साहित्य के आधुनिक काल की छायावादी काव्य धारा में छायावादी कवियों यथा पंत, प्रसाद, निराला, महादेवी वर्मा प्रभृति का पर्यावरणीय चिंतन मुखरित हुआ है। इन कवियों ने प्राकृतिक उपादानों के माध्यम से वैयक्तिक अनुभूतियों को प्रकट किया है। छायावादी कवि पर्यावरण प्रदूषण, जल, वायु प्रदूषण, जल प्रलय वन्य जीव संरक्षण आदि पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति सजग एवं चिंतित है। गंगा, यमुना जैसी पवित्र नदियों के प्रदूषित जल पर कवि आँसू बहाते दृष्टिगत होते हैं। कामायनी में जल प्रलय द्वारा सृष्टि विनाश का कारण देवताओं की स्वेच्छाचारी प्रवृत्ति को बताया है। वस्तुतः प्रकृति संरक्षणीय है। वह हमें कर्मनिष्ठा ओर गतिशीलता का सन्देश देती है। छायावादी कवियों का पर्यावरणीय चिंतन वर्तमान में भी मौलिक और प्रासंगिक है। छायावादी काव्य में निहित पर्यावरणीय चेतना के विभिन्न सूत्रों की खोज मेरे शोध का विषय है।

मुख्य शब्द : छायावादी काव्य, पर्यावरण और हम, पर्यावरणीय चिंतन।

रामरतन सैन
शोधार्थी,
हिन्दी विभाग,
सम्राट पृथ्वीराज चौहान
राजकीय महाविद्यालय,
अजमेर, राजस्थान, भारत

प्रस्तावना

प्रकृति ईश्वर का सर्वोत्तम उपहार है और मानव ईश्वर की श्रेष्ठतम कृति। मानव शरीर का संघटन प्राकृतिक उपादानो यथा–पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश और वायु नामक पंच तत्वों से हुआ है। ये सभी तत्व भौतिक एवं पर्यावरणीय है। मानव प्रकति की गोद में ही जन्म लेता है, श्वास लेता है, इसका अन्न–जल खा–पीकर ही बड.ा होता है और अंततः उसी में समा जाता है। गोस्वामी तुलसीदास के अनुसार–

क्षिति जल पावक गगन समीरा।
पंच रचित अति अधम शरीरा।। [1]

प्रकृति और पुरुष से सृष्टि का निर्माण हुआ है। परमात्मा एकमात्र अविनाशी पुरुष है और प्रकृति उसकी सहचरी है। प्रकृति पर्यावरण का ही अंग या पर्याय है। प्रकृति–पुरुष के तादात्म्य को शास्त्रों में इस प्रकार प्रकट किया है–

जगन्माता च प्रकृति पुरुषश्च जगत्पिता।
गरीयसीति जगतां माता शतगुणैः पितु।।[2]

अध्ययन का उद्दे य

छायावादी काव्य में निहित पर्यावरणीय चेतना के विविध स्वरुपो की खोज एवं विवेचन ही शोध का मुख्य उद्देश्य है।

पर्यावरण और हम

पर्यावरण हमारे चारों ओर का वह आवरण है जो हमें घेरे हुए ह। पर्यावरणविद फिटिंग के अनुसार–"सजीवों का पारिस्थितिकीय योग ही पर्यावरण है।"[3] पर्यावरण के मुख्य दो घटक ह– एक भौतिक तथा दूसरा जैविक। स्थल जल और वायु भौतिक घटक हैं तथा पेड़–पौधे और छोटे–बड़े सभी जीव–जन्तु जैविक घटकों के अन्तर्गत आते हैं। समाज प्रकृति से इतर वायवी नहीं हो सकता है अतः साहित्य प्रकृति से असपृक्त नहीं है।

छायावाद में पर्यावरण चेतना

हिन्दी साहित्येतिहास के विभिन्न काल–खण्डों की काव्य–प्रवृत्तियों में प्रकृति –वर्णन किसी न किसी रुप में हुआ है किन्तु आधुनिक काल की छायावादी काव्य धारा के कवि प्रकृति–प्रेमी होने के कारण प्रकृति से उनका अभिन्न जुड़ाव रहा है। नदी या सागर में उठी हिल्लोल हो या शीतल बयार का एक झोंका कवि–हृदय–कलिका को प्रस्फुटित कर एक नवीन भाव –सुवास और ताजगी से भर देता है। पक्षियों का कलरव जब मानव के कर्ण– कोटरों में मादक रस घोलता ह तब एक कविता कवि–कंठ से फूट पड़ती है तो कवि उस पक्षी से पूछता है–

सूर्य की पहली किरण का आना

रंगिनी तूने कैसे पहचाना ?[4]

जयशंकर प्रसाद की 'कामायनी ' का चिन्ता सर्ग मनु के प्रलयकालीन प्रकृति सम्बन्धी चिंतन से प्रारम्भ होता है , जो वर्तमान में प्रासंगिक एवं चिन्तनीय है–

हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर ,
बैठ शिला की शीतल छांह,
एक पुरुष भीगे नयनों से देख रहा था
प्रलय प्रवाह।
नीचे जल था ऊपर हिम था ,
एक तरल था एक सघन ,
एक तत्व की ही प्रधानता–
कहो उसे जड. या चेतन।[5]

मनु की यह चिन्ता प्राकृतिक असंतुलन और अति –दोहन के संदर्भ में प्रासंगिक है। प्रकृति सदैव न्याय करती है।उसके साथ हम जैसा करेंगे वैसा ही परिणाम हमें प्राप्त होगा। सृष्टि के बाद कालान्तर में प्रलय परिवर्तन का सहज क्रम है किन्तु इस प्रलय अथवा प्राकृतिक आपदा के लिए मनुष्य की स्वार्थी और अर्थ लोलुप प्रवृत्ति जिम्मेदार है। हिम–गलन और भू–स्खलन भी एक प्राकृतिक आपदा है। जिसके कारण जल–प्रलय के रुप में प्राकृतिक विनाश उपस्थित हुआ। 'कामायनी' में प्रसादजी ने इसका कारण देवताओं की अतिशय विलासिता और असंयमित व्यवहार को बताया है–

प्रकति रही दुर्जेय,
पराजित हम सब थे भूले मद मे ,
भोले थे, हाँ तिरते केवल
सब विलासिता के नद में।[6]

पर्यावरण प्रदूषण और उसके दुष्परिणाम एक वैश्विक ज्वलन्त समस्या है। यह कई रुपों में हमारे सामने आ रहा है जैसे–जल, वायु, ध्वनि व मृदा प्रदूषण, बाढ, भूकम्प, ज्वालामुखी आदि प्राकृतिक आपदाएँ, भूगर्भीय ताप में वृद्धि, ग्रीनहाउस प्रभाव, आजोनक्षय, वन–विनाश लुप्त होती वन्य–जीव प्रजातियाँ,मौसम–चक्र में परिवर्तन आदि। ये आपदाएँ मानव द्वारा प्रकृति के अतिशय दोहन और घोर स्वार्थपरता का प्रतीक हैं। महात्मा गाँधी ने कहा ह–"धरती माँ हर जीवधारी की आवश्यकताओं को तो पूरा कर सकती है, परन्तु किसी के लालच को नहीं।"[7]

प्रकृति के सकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत ने 'गुंजन' काव्य की 'नौका–विहार' कविता में गंगा के स्निग्ध,कोमल वातावरण का वर्णन करते हुए लिखा है–

शांत स्निग्ध ज्योत्स्ना उज्ज्वल।
अपलक अनंत नीरव भूतल।
शैकत–शय्या पर दुग्ध–धवल,
तन्वंगी–गंगा, ग्रीष्म विरल।
लेटी है श्रांत क्लान्त, निष्चल।[8]

महादेवी वर्मा ने भी जीव–ब्रह्म के गुप्त वार्तालाप की सहज अभिव्यक्ति सुन्दर प्राकृत–बिम्बों में की है–

जब कपोल गुलाल पर शिशु प्रात के
सूखते नक्षत्र जल के बिन्दु से,
रश्मियों की कनक–धारा में नहा
मुकुल हँसते मोतियों का अर्घ्य दे
स्वप्न शाखा में यवनिका डाल जो
तब दृगों को खोलता वह कौन है ?[9]

छायावादी कवियों का पर्यावरणीय चिंतन

छायावादी काव्य में निहित प्रकृति–सौन्दर्य वर्णन अब आकाश–कुसुम सदृश हो गया है। प्रकृति–नटी अब वसन्त के उल्लास में मुक्त विहार नहीं करती अपितु अपने अतीत–गौरव पर करुण विलाप करती नजर आती है।पंत ने भौतिक और यांत्रिक विकास की कीमत पर प्रकृति पर होन वाले अत्याचार के प्रति अपनी पीड़ा को इन पंक्तियों में अभिव्यक्त किया है–

"समदिग् यांत्रिकता में बँधकर,
बन सकता मनुज न चक्रदन्त।"[10]

प्रकृति में पेडों द्वारा सूर्य के प्रकाश में भोजन बनाने की क्रिया (प्रकाश–संश्लेषण) का भी सुन्दर एवं सटीक वर्णन छायावादी काव्य में मिलता है–

"वह सूर्यकिरण मणि पात्रों से ,
पीता स्वर्णिम चित्त–रस आसव।"[11]

वृक्षों को ब्रह्म की उपाधि दी गई है।गीता में श्रीकृष्ण ने स्वयं को अष्वत्थ (पीपल) वृक्ष बताया है। परन्तु मनुष्य अपने क्षुद्र स्वार्थों के कारण उनका विनाश करते है व उन्हें काटने से बाज नहीं आते है।

समसामयिक साहित्य का पर्यावरणीय चिंतन

राजस्थानी कवि शिव मृदुल की ये पंक्तियाँ दृष्टव्य है–

रूँख लगाया राख्या कोनी,
मीठा फळ भी चाख्या कोनी।
सवारथ री ले हाथ कुल्हाडो
काटण हुया उतावला।
बोलो किणरा काम सरावाँ
किणनै बोलां बावला।[12]

वृक्षों के संदर्भ में कुँवर कुसुमेश की कुछ पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं–

खुद पर न सही ,लेकिन पेड़ों पे भरोसा रख,
नायाब जमीं पर ये भगवान का तोहफा रख।
माना कि गरीबी में मुश्किल है बागवानी,
गमले में मगर छोटा तुलसी का पौधा ही रख
ओजोन की छतरी का लिल्लाह दरक जाना,
कहना है नहीं माना तो झेल ,ये खतरा रख।
मत काटना पेडों को खुशिया के तमन्नाई,
पहले जहाँ की खातिर खुशियों की तमन्ना रख।
मालिक से 'कुँवर' कोई बात नहीं छुपती,
इंसान से रखना है तो शान से पर्दा रख।[13]

'कामायनी' में जयशंकर प्रसाद ने श्रद्धा से पशुओं के वध को अमान्य बताते हुए कहलवाया है–

चमडे. उनके आवरण रहें
ऊनों से मेरा चले काम
वे जीवित हों मांसल बनकर
हम अमृत दुहें– वे दुग्धधाम।
वे द्रोह न करने के स्थल हैं
जो पाले जा सकते हैं सहेतु,
पशु से यदि हम कुछ ऊँचे हैं

तो भव–जल निधि में बनें सेतु।[14]

पर्यावरणीय संदे□ा

प्रकृति मनुष्य का सुख तो देती ही है, शिक्षा भी देती है। भाव–सौन्दर्य के साथ कर्म–सौन्दर्य की प्रेरणा तथा आध्यात्मिक साधना का उपदेश भी मनुष्य प्रकृति से ग्रहण करता है। निर्झर–गान कर्म–सौन्दर्य का भाव जागृत करने वाला है–

जलद ज्योत्स्ना के गात।
अटल हो यदि चरणों में ध्यान,
शिलोच्चय के गौरव संघात,
विश्व है कर्म प्रधान।[15]

इसी प्रकार 'छाया' के रुपरंग और क्रिया–व्यापार पर कवि मुग्ध है क्योंकि वह विश्वसेवा का मार्ग दिखाती है–

थके चरण चिह्नों को अपनी
नीरव उत्सुकता से भर,
दिखा रही हो अथवा जग को
पर सेवा का मार्ग अमर ?[16]

निष्कर्ष

इस प्रकार हम निष्कर्षतः यह कह सकते है कि छायावादी कवियों का पर्यावरणीय चिन्तन जहाँ एक ओर उनका उन्मुक्त प्रकृति–प्रेम है वहाँ दूसरी ओर वर्तमान में भी प्रासंगिक है। हमें छायावादी पर्यावरणीय चिन्तन–धारा में विचार रुपी ऐसे अमूल्य मोक्तिक मिलते हैं जिनसे दिग्–दिगन्त प्रकाशित है। निश्चय ही छायावादी कवियों की पर्यावरणीय चेतना मुखर, प्रौढ और प्रांजल थी जिसने छायावादी काव्योद्यान में सुन्दर कविता–कुसुम खिलाकर मानव–मात्र को विचार–सुरभि से सुवासित कर दिया।

अंत टिप्पणी

1. *रामचरितमानस तुलसीदास पृष्ठ–152 गीताप्रेस गोरखपुर 2010*
2. *प्रकृति , पर्यावरण और धर्म लेखक डा. सुरेश वर्मा पृष्ठ–16 साहित्यागार जयपुर सं. 2011*
3. *पर्यावरणीय शिक्षा संपादक डा. एल.के. दाधीच पृष्ठ–02 व.म.खु. वि. वि. कोटा सं. 2007*
4. *गुंजन सुमित्रानंदन पंत पृष्ठ–36 लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद सं. 2014*
5. *कामायनी जयशंकर प्रसाद पृष्ठ–13,14 हिन्द पोकेट बुक्स नई दिल्ली सं. 2000*
6. *कामायनी जयशंकर प्रसाद पृष्ठ–13,14 हिन्द पोकेट बुक्स नई दिल्ली सं. 2000*
7. *पर्यावरण डाइजेस्ट पत्रिका जून 2013 सं. डा. खुशाल सिंह पुरोहित पृष्ठ–35*
8. *गुंजन सुमित्रानंदन पंत पृष्ठ–78 लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद सं. 2014*
9. *संधिनी महादेवी वर्मा पृष्ठ–75 लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद सं. 2005*
10. *पल्लव पंत पृष्ठ–73 राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली सं. 1993*
11. *पल्लव पंत पृष्ठ–73 राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली सं. 1993*
12. *शिवमृदुल पृष्ठ–84 राजस्थान पाठ्यपुस्तक मंडल जयपुर सं. 2010*
13. *प्रकृति, पर्यावरण और धर्म लेखक डा. सुरेश वर्मा पृष्ठ–120 साहित्यागार जयपुर सं. 2011*
14. *कामायनी जयशंकर प्रसाद पृष्ठ–30 हिन्द पोकेट बुक्स नई दिल्ली सं. 2000*
15. *पल्लव पंत पृष्ठ–67,84 राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली सं. 1993*
16. *पल्लव पंत पृष्ठ–67,84 राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली सं. 1993*